e-Governance in Education

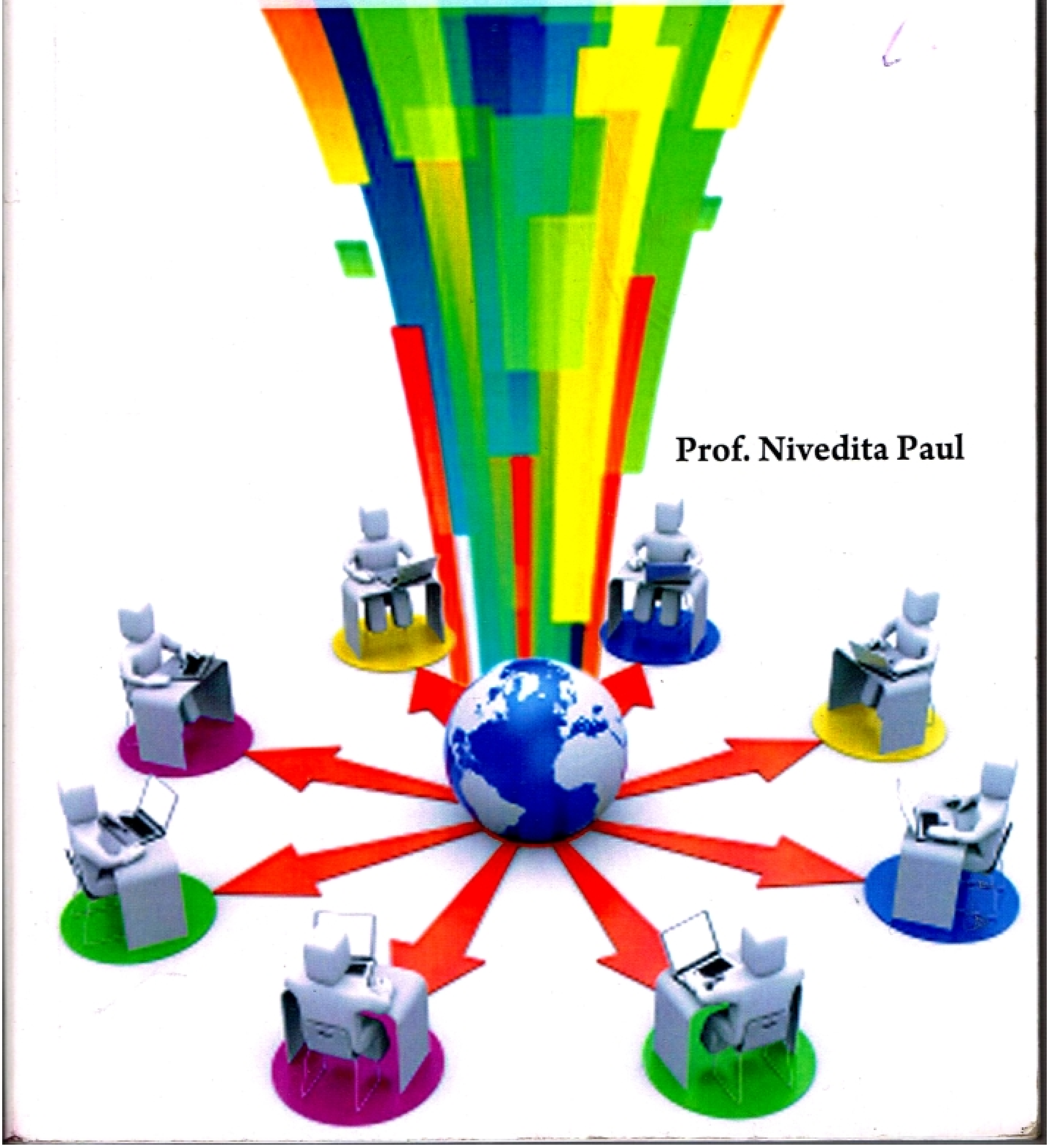

Prof. Nivedita Paul

Sl. No.	Topic	Pg. No.
32	ई–गवर्नेंस के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन –डॉ. मनोज कुमार झारिया एवं श्री भूपेन्द्र निगम	374
33	समूह 'ब' व्यक्तित्व विकृति के अंतर्गत हिस्ट्रीओनिक विकृति के उपचार में क्लीनिकल ग्लोबल इम्प्रेशन परीक्षण का तुलनात्मक अध्ययन –डॉ. रत्ना जौहरी	382
34	ई–लर्निंग के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति –डॉ. कीर्ति ठाकरे	392
35	ई–गवर्नेंस का समाज के विकास में योगदान –श्रीमती मुक्ता चौकसे	401
36	शिक्षा में ई–प्रशासन –श्रीमती पूनम मिश्रा	410
37	भारत में ई ऐजुकेशन और डिजिटल अर्थव्यवस्था –डॉ. (श्रीमती) सुधा द्विवेदी	418
38	प्रौद्योगिकी परिवर्तन के सन्दर्भ में मूल्य और नैतिकता का समावेश –डॉ. परिधि वर्मा	432
39	बच्चों एवं सोसायटी पर सोशल नेटवर्क एवं मीडिया का कार्यात्मक प्रभाव –डॉ. अन्जू यादव	440
40	सोशल मीडिया –डॉ. अनुपमा जायसवाल	450
41	शिक्षा के बहुआयामी विकास में सूचना क्रांति का महत्व –डॉ. प्रीति पाठक	459
42	शिक्षा के वर्तमान परिपेक्ष्य में ICT, उपयोग, लाभ एवं चुनौतियाँ –डॉ. विनय कुमार दीवान	470
43	शिक्षा के क्षेत्र में ई–गवर्नेंस का प्रभाव –श्रीमती गुंजिता गुप्ता	482

Sl. No.	Topic	Pg. No.
44	महिला सशक्तिकरण में (आई.सी.टी.) सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका –श्रीमती मनीषा श्रीवास्तव	492
45	सामाजिक नेटवर्क का कार्यस्थल व्यवहार पर प्रभाव –श्रीमती राधा गुप्ता	500
46	कार्यस्थल व्यवहार में सोशल नेटवर्क का प्रभाव –श्रीमती रश्मि शुक्ला	513
47	मूल्यपरक आचार विचार का समावेश प्रौद्योगिकी परिवर्तन के संबंध में –श्रीमती सुषमा पिल्ले	525
48	राष्ट्रीय ई–शासन योजना –श्रीमती शशि दुबे	534
49	वर्तमान परिपेक्ष्य में सोशल मीडिया की भूमिका डॉ (श्रीमती) सुलक्षणा त्रिपाठी	554
50	सामाजिक नेटवर्क का कार्यस्थल पर प्रभाव –डॉ. तृप्ति श्रीवास्तव	562
51	तकनीकी परिवर्तन का मूल्य एवं आचार पर प्रभाव –डॉ. विभा श्रीवास्तव	572

दुरूपयोग करना है क्योंकि ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है– "ज्ञानजस्य मनुष्यं त्रतीय नेत्रं" और इस नेत्र को खोलकर ही ज्ञान अर्जित करना है जिससे यह सोशल नेटवर्क हमें ऊचाईयों की बुलंदियों पर पहुंचाएगा।

संदर्भ–

1– "गोपनीयता मृत है: सोशल मीडिया पृष्ठभूमि चेक का जन्म" सॉन्डर्स, शेरी डेनिस दक्षिणी विश्वविद्यालय लॉ रिव्यू, मार्च 2012

2– "नौकरी उम्मीदवारों के मूल्यांकन पर सोशल नेटवर्किंग वेब साइट्स का प्रभाव" बोहनर्ट, डैनियलय रॉस, विलियम एच। साइबरसाइकोलॉजी, व्यवहार और सोशल नेटवर्किंग। जून 2010।

3– "2011–2012 टावर्स वाटसन चेंज एंड कम्युनिकेशन आरओआई स्टडी" टावर्स वाटसन, न्यूयॉर्क, एनवाई, 2012।

4– "यौन उत्पीड़न बनाम कार्यस्थल रोमांस" कार्यस्थल में सोशल मीडिया स्पिलओवर और टेक्स्टल उत्पीड़न" मेनियरो, लिसाय जोन्स, केविन अकादमी प्रबंधन परिप्रेक्ष्य फरवरी 2013।

5– "कर्मचारी सामाजिक मीडिया उपयोग के कानूनी प्रभाव" डेनिस, कोरी एम मैसाचुसेट्स लॉ रिव्यू, 2011, वॉल्यूम 93, नंबर 4

6– "सूचना सुरक्षा नीति मामले मामले कानून के रूप में नियोक्ता सुरक्षा और कर्मचारी गोपनीयता के बीच संतुलन की ओर ले जाता है " जंगेक, कैथलीनय रहमान, सैयद (शॉन) एम। कॉन्फ्रेंस ऑन सिक्योरिटी एंड मैनेजमेंट, 2011।

7– "कार्यस्थल में सामाजिक मीडिया का प्रभाव " मैरियन हेरल और विवियन एस्ट्रै–कैनेडा फ्लोरिडा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, यूएसए

8– "कॉल सेंटर 1 में सोशल नेटवर्क और कर्मचारी प्रदर्शन जेएसटीओआर" कैस्टिला, ईजे (2005) अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, 110 (5), 1243–

9. "कम्प्यूटर नेटवर्क और ई–मेल : विजय खारे

मूल्यपरक आचार विचार का समावेश प्रौद्योगिकी परिवर्तन के संबंध में

श्रीमती सुषमा पिल्ले
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)
संत अलॉयसियस (स्वशासी)
महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी का प्रयोग दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। शिक्षा का क्षेत्र भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं रहा हैं। आज शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह उद्देश्यों के निर्धारण का हो, विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण का हो, शैक्षिक उद्देश्यों के मूल्यांकन का हो, अनुसंधान से संबंधित हो अथवा शिक्षा में नवाचार के प्रयोग का हो, प्रौद्योगिकी से युक्त ज्ञान और बदलाव की महत्ती आवश्यकता चहुँओर दृष्टिगत होती हैं। आज प्रौद्योगिकी द्वारा ही शिक्षा व समाज के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रभावशाली परिवर्तन संभव हो पाया हैं।

आज शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी की संकल्पना शिक्षा को गरिमा, सृजनात्मकता प्रदान करती हैं। शिक्षा के नये आयाम में सूचना के पारेशण, संग्रहण, निर्माण, प्रदर्शन या आदान–प्रदान के द्वारा प्रौद्योगिकी परिवर्तन से पाठ्यक्रम को और अधिक प्रभावी व स्थायी बनाया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में विगत कुछ वर्षों से प्रयास किया जा रहा था कि प्रौद्योगिकी का शिक्षा के क्षेत्र में कैसे उपयोग किया जा सकता है इसके अंतर्गत सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सहायता से छात्र अव ई–पुस्तक, परीक्षा के नमूने वाले प्रश्न पत्र, पिछले वर्षो के प्रश्न–पत्र आदि देखने के साथ संसाधन व्यक्तियों मेंटोर विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं व्यावसायिकों और साथियों से दुनिया के किसी भी कोने पर आसानी से संपर्क कर सकते है।

जब से प्रौद्योगिकी को एक शिक्षण माध्यम के रूप में उपयोग किया

गया हैं इसने एक त्रुटिहीन प्रेरक साधन के रूप में कार्य किया है, इस में वीडियों, टेलिविजन, मल्टीमीडिया, कम्प्यूटर, सॉफ्टवेयर का उपयोग शामिल हैं इससे छात्र सीखने की प्रक्रिया में गहराई से जुड़ते है। ई–शिक्षण प्रौद्योगिकी ऑनलाईन प्रवेश परामर्श, आभासी कक्षा–कक्ष, बृहस्पति द्वारा क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए है।

प्रौद्योगिकी ने आज हमारे सोचने विचारने ,बातचीन करने, एक दूसरे के साथ संपर्क और प्रेशण करने सभी में एकदम बदलाव ला दिया हैं । आज मानवीय पक्ष का कोई भाग ऐसा नही है जो प्रौद्योगिकी या तकनीकी के प्रभाव से अछूता रहा हो।

"मनुष्य में अन्तः निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति का नाम शिक्षा है"
–स्वामी विवेकानन्द

सर्वज्ञात है कि शिक्षा वह प्रकाश पुंज है जो अंधकार को समाप्त कर मानव में विवेक जागृत कर प्रगति मार्ग पर प्रशस्त कर उसे समग्र रूप में मानव बनाती हैं। मानव इतिहास के आदिकाल से ही शिक्षा 'स्व' से 'सर्वस्व' तक की प्रक्रिया है इसीलिए प्रत्येक देश अपनी सामाजिक, साँस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति देने के साथ ही समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली विकसित करता हैं क्योंकि शिक्षा का प्राचार–प्रसार वह मूल्यवान गतिविधि हैं जो वांछित परिणामात्मक और गुणात्मक उपलब्धियों के रूप में देशवासियों को प्रगति के पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर करके उनके विकासरूपी रथ की धूरी बनती है इसीलिए भारत सहित विश्व के समस्त राष्ट्रों में शिक्षा का प्रावधान विधिक (Statutory)व अनिवार्य(obligatory)आवश्यकता हैं।

प्राचीन भारतीय शिक्षादर्शन व मूल्यतंत्र

प्राचीन आर्यावर्त में शिक्षा का उद्देश्य **"सा विद्या या विमुक्तये"** अर्थात समस्त सांसारिक बंधनो से मुक्ति प्राप्त कर **अमरत्व** (मोक्ष–जीवन का श्रेष्ठतम विकास) सुनिश्चित करना था मोक्ष द्वारा अमरत्व प्राप्ति का

माध्यम **पुरूषार्थ चतुष्टय** (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) था जिसके अंतर्गत जीवन का सर्वोच्च अभीश्ट **लौकिक** (अर्थ काम) **पारलौकिक** (धर्म, मोक्ष) उत्कर्श समाहित था जो जीवन का **अभ्युदय** (पूर्ण भौतिक उत्कर्श) एवं **निःश्रेयस** (आध्यात्मिक विकास) सिद्ध होता था। पर आज की शिक्षा की उपलब्धि पर एक नज़रीया यह भी है–

''सभी कुछ हो रहा है इस तरक्की के जमाने में
मगर यह क्या गजब है आदमी इंसा नहीं होता ।।''

अतः हमें अपने मौलिक अस्तित्व अर्थात् अध्यात्मिकता को पहचानना होगा ।

आध्यात्मिकता का अर्थ है– अपने अस्तित्व का ज्ञान, वह ज्ञान जिससे बोध हो कि हम कौन है? क्यों है? और हमारा उद्देश्य या लक्ष्य क्या है ? क्योंकि जब हम स्वयं को पहचान पाएंगे तभी यह जान पाएंगे कि हमारी स्वयं के प्रति व राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी क्या है? युग की सबसे बड़ी समस्या है – व्यक्ति का भौतिक संस्कृति से लगाव और आध्यात्मिक संस्कृतिक से अलगाव व्यक्ति की इसी मनोवृत्ति ने अनेकानेक समस्याओं को जन्म दिया है – वर्तमान युगीन समस्याओं का सबसे बड़ा समाधान सूत्र हैं – व्यक्ति में **''आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण''** यही आज की सबसे बड़ी अपेक्षा है और इस अपेक्षा पूर्ति के लिए आवश्यकता है, प्रचलित जीवन शैली को बदलने की और नवीन जीवनशैली को समझने की इसके लिए आवश्यक है – एक नयी विद्या शाखा के विकास और उसके लिए सुव्यवस्थित वैज्ञानिक उपक्रम अपनाने की क्योंकि विज्ञान आध्यात्म यह सामंजस्य ही भारत को पुनः विश्वगुरू बना पायेगा ।

आज हमारा समाज एक संधिकाल से गुजर रहा है और हम सभी गहन संक्रमण काल से ऐसे में आध्यात्मिकता और वैज्ञानिकता का सामंजस्य ही वह माध्यम है जो मानवीय उत्कर्ष की प्रक्रिया के पाँच पक्षों – (शारीरिक, बौद्धिक , भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक) के दायरे के अंतर्गत

मानव में निहित सर्वोत्तम तत्वों का प्रस्फुटन इस प्रकार करेंगे जिससे उसके व्यक्तित्व को पूर्णत प्राप्त होगी और उसका सर्वागीण (शरीर, मन, आत्मा) विकास संभव हो पायेगा।

आध्यात्म विज्ञान का सामंजस्य स्थापित हो पायेगा मूल्यों और नैतिकता के पोषण द्वारा नैतिकता तो भारतीय जीवन का नियमन हैं। मूल्य प्रत्येक मानव में संस्कार के रूप में पोषित, परिमार्जित हो व्यवहारिक स्वरूप में उसकी अस्मिता बन युग तत्व को अनुप्राणित कर दिशा देने के साथ युगबोध को विस्तीर्णता दे जीवन का नियमन कर सृजन को दृष्टि प्रदान करते हैं।

मुनष्य को आध्यात्मिक बुद्धि ईश्वर का वरदान है। सामान्य रूप से हम जिस प्रकार का सोचते हैं और हम जो निर्णय लेते हैं उस सबके पीछे आध्यात्मिक बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि विज्ञान की प्रगति के साथ–यह माना जाने लगा हैं कि व्यक्तित्व को पूर्णता केवल आध्यात्मिकता ही दे सकती है।

आध्यात्मिकता का संबंध व्यक्ति के ब्रह्मांड के साथ संबंधों के रूप में लिया जा सकता है आध्यात्मिक विकास में सामान्य रूप से व्यक्ति का अन्य लोगों के साथ अंतर्दृष्टि का विकास होता है इसमें जहाँ एक ओर व्यक्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति बौद्धिकता एवं मन की शुद्धता होती हैं, वही दूसरी ओर इच्छाओं पर नियंत्रण होता है।

यह हमारे मानवीय मूल्य एवं विश्वास की आधारशिला के रूप में रहती हैं आध्यात्मिकता से हमारे जीवन को उद्देश्य एवं अर्थ मिलता हैं और अभ्यास से जब हम इसका विकास करते है, हममें विश्वास और प्रेम का विकास होता है इससे व्यक्ति में अदृश्य शक्ति के प्रति गहन झुकाव एवं आदर हो जाता हैं। आध्यात्मिकता के माध्यम से ही व्यक्ति के जीवन में विश्वास एवं दूसरों की सेवा करने की भावना का उदय होता है ।

प्राचीन भारतीय शैक्षिक दर्शन :– प्राचीन आर्यावर्त में शिक्षा का उद्देश्य ''सा विद्या या विमुक्तये अर्थात समस्त सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त कर अमरत्व (मोक्ष – जीवन का श्रेष्ठतम विकास) सुनिश्चत करना था। मोक्ष द्वारा अमरत्व प्राप्ति का माध्यम पुरूषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) था जिसके अंतर्गत जीवन का सर्वोच्च अभीष्ट लौकिक (अर्थ, काम) और पारलौकिक (धर्म, मोक्ष) उत्कर्ष समाहित था, जो जीवन का अभ्युदय (पूर्ण भौतिक उत्कर्ष) एवं निः श्रेयस (आध्यात्मिक विकास) सिद्ध होता था।

शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति के साधन प्राचीन विद्या निकेतन केंद्र गुरूकुल, आश्रम थे जो ज्ञान की समृद्ध परंपरा के संवाहक के रूप में जीवन मूल्य दर्शन की कतिपय गौरवमयी विशेषताओं–जैसे गुरूकुल की आवासीय व्यवस्था में इकहरी शिक्षा व्यवस्था (सबको एक समान निःशुल्क शिक्षा उदाहरण – कृष्ण–सुदामा) आचार्य का शिष्यों से भावपूर्ण आत्मीय पुत्रवत संबंध स्थापित कर उनका सतत मूल्यांकन करना, शिक्षार्थियों का पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन पर स्वानुशासन व शिक्षा के प्रति समर्पण का उच्चतम आदर्श आदि के द्वारा शिक्षा के गुणात्मक विकास के शाश्वत आदर्शो के रूप में परा–अपरा विद्या के माध्यम से वह ज्ञान प्रदान करने में संलग्न थे जिसमें अध्ययन–अध्यापन कर चरित्रवान श्रमशील, श्रेष्ठ, कर्मठ, तेजस्वी, विद्यार्थी उद्भूत होते थे ।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सदा ही सत्यम शिवम् सन्दुरम् के सानिध्य में मानवीय व्यक्त्ति के निर्माण पर बल दिया जाता रहा है इसलिये आजाद भारत के संविधान व शैक्षिक सुधार संबंधी गठित सभी आयोग/समितियों द्वारा यह व्यवस्था सुनिश्चित की गई कि एक निश्चित स्तर तक प्रत्येक विद्यार्थी को बिना किसी भेदभाव के एक जैसी निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध करायी जायेगी व राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था पूरे देश के लिए एक सामान्य केन्द्रक (कामनकोर) होगा जिसमें राष्ट्रीय अस्मिता से संबंधित अनिवार्य तत्व शामिल होगें जो पाठ्यक्रम के अंतर्गत सभी विषयों में पिराये जायेंगे जिसके द्वारा राष्ट्रीय शाश्वत मूल्यों को हर इंसान की सोच और

जिदंगी का हिस्सा बनाने की कोशिश की जावेगी। **"भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है (1964–66 कोठारी आयोग)** औपचरिक शिक्षा की प्रक्रिया में विद्यालयीन उपादेयता पर लेशमात्र भी संदेह नहीं किया जा सकता क्योंकि विद्यार्थियों के भाग्यनिर्माण की कार्यशाला देश की शिक्षण संस्थायें ही हैं । अतः शिक्षा द्वारा ऐसे मापदण्ड और नियमावली सुनिश्चित की जानी चाहिए – जिनका अनुपालन करके निकट भविष्य में विद्यार्थी एक आदर्श नागरिक के रूप में आवश्यकतानुसार राष्ट्र का पुनः निर्माण कर सकें। क्योंकि व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास (मन, शरीर, आत्मा) ही किसी भी शिक्षा प्रणाली का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए ।

जीवन मूल्य और उनके उनके उद्भव स्थलः–

जिन प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों के पुर्नस्थापना की चर्चा आज चहुँओर हो रही है उन मूल्यों का उद्भव कहाँ व कैसे हुआ यह प्रश्न उठना अत्यंत सहज व स्वाभाविक हैं क्योंकि प्राचीनकाल में मूल्यों की शिक्षा पृथक से नहीं दी जाती थी अपितु मूल्यपरक शिक्षा दी जाती थी ।

पुरातनता तथा आधुनिकता में संबंध :–

अंग्रेंजो के आगमन के पूर्व भारतीय शिक्षा मूल्य परक थी। अतः अलग से मूल्य शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं थी अंग्रेजों के समय क्लर्क पैदा करने की शिक्षा पद्धति अपनायी जिसके अर्न्तगत ऐसी व्यवस्था की कि भारतीय शरीर से तो भारतीय रहे किन्तु मन, मस्तिश्क व्यवहार से अंग्रेज बन जाये। इस परिस्थिति ने ही भारत में आधुनिकता को जन्म दिया वर्तमान क्लर्की शिक्षा पद्धति में परिवर्तन लाने के अथक प्रयास किये जा रहे हैं क्योंकि इसके कारण हमारी संस्कृति, आयुर्वेद खगोलविद्या, आध्यात्म विद्या, शुद्ध स्नेहयुक्त पारिवारिक सामाजिक व्यवस्था आदि प्राचीन विरासत से हमने मुँह मोड़ लिया उसकी जगह पाश्चात्य भोग–विलासमय, मर्यादाहीन संस्कृति को अपना बना लिया हैं जो समाज में मूल्यहीनता का सबसे बड़ा कारण सिद्ध हुई है।

मूल्यों के पोषण में विद्यालय और परिवार की भूमिका :– परिवार ही बालक की प्रथम पाठशाला है जहाँ उसमें मूल्यों और नागरिकता का पोषण संस्कारों के रूप में किया जाता है व्यक्ति और राष्ट्र परस्पर सापेक्ष होने के साथ ही साधन व साध्य दोनो होते हैं । किसी भी राष्ट्र का हित·उन्नयन उसके सुयोग्य, आदर्श नागरिकों पर ही निर्भर करता है और अपने हित साधना हेतु राष्ट्र ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित करता है कि उसके प्रत्येक रहवासी को अपने सम्यक सर्वांगीण विकास के समुचित सुअवसर प्राप्त हो और वे अपने कर्तव्यों व दायित्वों का निर्वाहन राष्ट्र हित में कर सकें । क्योंकि आज के विद्यार्थी ही कल के नागरिक है और हम भविष्य में किस तरह के भारतीय स्वरूप की संरचना करना चाहते हैं इसकी शुरूआत विद्यालयों से करनी होगी ।

मूल्यों के पोषण में शिक्षकों का उत्तरदायित्व :– शिक्षा एक प्रतिपादन है जिसका मूर्तरूप शिक्षक है वर्तमान परिवेश में कुशल शिक्षक के लिए शिक्षा से तात्पर्य है नित्य किसी न किसी नवीनता से टकराहट या उसकी खोज जिसके आधार पर विद्यार्थियों में अध्यापन कौशल और व्यवहार कुशलता द्वारा नई सोच, नयी खोज, नये विचार, पैदा कर सके और यह तभी संभव हो सकता है जब एक शिक्षक स्वयं में बदलते हुये सामाजिक, सांस्कृतिक राष्ट्रीय, अंर्तराष्ट्रीय संप्रत्ययों, आवश्यकताओं प्रतिमानों के अनुरूप परिवर्तन लाकर उसके प्रति संचेतना को जागृत कर सकें। संचेतना लाने के उत्तरदायित्व के निर्वहन में शिक्षक एक अग्रदूत की भूमिका निभा सकता है क्योंकि पाठ्यक्रम शिक्षक के हाथ में एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से वह अपने विद्यालय में अपने उद्देश्यों के अनुरूप छात्र के व्यवहार में वांछित परिवर्तन ला उसका परिमार्जन कर उसमें अनेकानेक सद्गुणों का अभिसिंचन द्रूतगति व स्थायित्व के साथ कर सकता है । मूल्यों की शिक्षा बालक परिवार आस–पड़ौस, विद्यालय, समाज, देश से प्राप्त करता है किंतु इन सभी मैं से विद्यालय और विद्यालय में भी शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों में मूल्यों के आभ्यन्तरीकरण में महत्वपूर्ण होती है क्योंकि **अध्यापक है युग निर्माता छात्र, राष्ट्र के भाग्य विद्याता ।**

भारतीय जीवन मूल्यों की अवधारणा :– मनुष्य जीवनपर्यन्त सीखता हैं। सीखने से प्राप्त अनुभव उसके आचरण और व्यवहार को उचित मार्गदर्शन व निर्देशन देते हैं कि उसे क्या करना चाहिए? या उसके लिये आदर्श क्या है ? इन्हीं आदर्शे को हम मूल्य कहते हैं। मूल्य वे आत्मिक शक्तियां है जिनको विद्यार्थी जीवन में परिपुष्ठ करके उसके **आचरण** (स्वयं के द्वारा किया गया काम) **व्यवहार** (दूसरों के लिए किया गया काम) **चिंतन** और **चरित्र** में वांछित परिवर्तन लाया जा सकता है। विद्यार्थी जब किसी वस्तु क्रिया, कार्य, विचार के पक्ष या विपक्ष में निर्णयात्मक ढंग से सोचता या विचार करता है और यह सोच स्वयं के साथ–साथ सर्वजन सुखाय – सर्वजन हिताय की दिशा में हो तो यह निर्णयात्मक विचार या सोच ही मूल्य है।

मूल्य उपदेशों से नहीं व्यवहार से सम्प्रेषित होते हैं। ''रत्तीभर व्यवहार टनो उपदेशों से अधिक महत्वपूर्ण है।'' **(बाल गंगाधर तिलक)**

जे.एस. रॉस के अनुसार – ''विद्यालय एक उद्यान है शिक्षार्थी एक कोमल पौधा, शिक्षक एक सतर्क कुशल माली'' जो पौधे की जीवन्तत्ता व विकास को अक्षुण्ण रखने हेतु उसमें समय–समय पर आवश्यकतानुसार उसे धूप दिखाने, सिचाई की व्यवस्था करता है। ठीक उसी प्रकार एक शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य द्वारा ऐसे प्रबंध करना चाहिए जिससे उसके विद्यार्थी रूपी पौधे में मूल्यों का प्रस्फुटन पल्लवन प्रवर्तन हो सके क्योंकि आवश्यकताओं के अनुरूप नये–नये युगीन मूल्यों के पुनः प्रतिष्ठापन की जितनी उत्कट आवश्यकता आज महसूस की जा रही है उतनी पहले कभी नहीं थी।

संदर्भ–

- आचार्य महाप्रज, जीवन विज्ञानः शिक्षा का नया आयाम, जैन विश्व भारती प्रकाशन, लाडनूं राजस्थान।
- डॉ. नत्थूलाल गुप्त मूल्य परक शिक्षा और समाज नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।

- नैतिक शिक्षा शिक्षण, रामशकल पाण्डेय एवं करूणाशंकर मिश्र, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- डंगवाल, डॉ. किरण लता वर्मा, डॉ. सुमन (2016) सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी, राखी प्रा. लि. आगरा।
- सिंह, डॉ. सत्येन्द्र शर्मा, डॉ. बृजेश शर्मा (2016) शैक्षिक तकनीकी एवं कम्प्यूटर, राखी प्रकाशन प्रा. लि. आगरा।
- नन्द, डॉ. विजय कुमार (2009) शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, संजय पब्लिकेशन्स, आगरा।